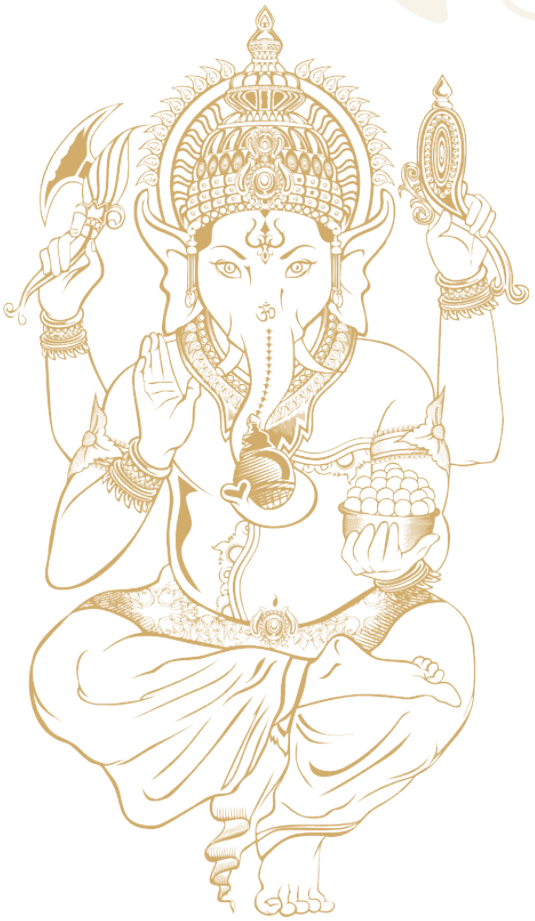

Mr. Saurav Sharma

Babita Kaushik

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121597706

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
11/10/1992 :	जन्म तिथि	: 29/05/1996
रविवार :	दिन	: बुधवार
घंटे 13:10:00 :	जन्म समय	: 06:21:00 घंटे
घटी 16:58:02 :	जन्म समय(घटी)	: 02:28:25 घटी
India :	देश	: India
Chandigarh :	स्थान	: Yamunanagar
30:43:00 उत्तर :	अक्षांश	: 30:07:00 उत्तर
76:47:00 पूर्व :	रेखांश	: 77:18:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:22:52 :	स्थानिक संस्कार	: -00:20:48 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:22:47 :	सूर्योदय	: 05:20:55
17:56:01 :	सूर्यास्त	: 19:15:48
23:45:38 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:48:28

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 13वर्ष 3मा 25दि	22:35:10	धनु	लग्न	वृष	28:10:42	मंगल 6वर्ष 7मा 4दि
शुक्र	24:29:00	कन्या	सूर्य	वृष	14:08:08	गुरु
04/02/2013	19:33:14	मीन	चंद्र	कन्या	24:06:17	01/01/2021
04/02/2033	21:13:31	मिथु	मंगल	मेष	25:39:39	01/01/2037
शुक्र 06/06/2016	12:03:29	तुला	बुध	मेष	25:53:56	गुरु 19/02/2023
सूर्य 06/06/2017	06:23:59	कन्या	गुरु व	धनु	22:55:48	शनि 02/09/2025
चन्द्र 05/02/2019	25:59:23	तुला	शुक्र व	मिथु	02:56:37	बुध 08/12/2027
मंगल 06/04/2020	18:04:43	मक व	शनि	मीन	11:30:25	केतु 13/11/2028
राहु 07/04/2023	29:58:14	वृश्चि व	राहु व	कन्या	22:08:21	शुक्र 15/07/2031
गुरु 06/12/2025	29:58:14	वृष व	केतु व	मीन	22:08:21	सूर्य 03/05/2032
शनि 04/02/2029	20:25:37	धनु	हर्ष व	मक	10:36:37	चन्द्र 02/09/2033
बुध 06/12/2031	22:28:17	धनु	नेप व	मक	03:43:00	मंगल 08/08/2034
केतु 04/02/2033	27:46:26	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	07:45:21	राहु 01/01/2037

लग्न-चलित

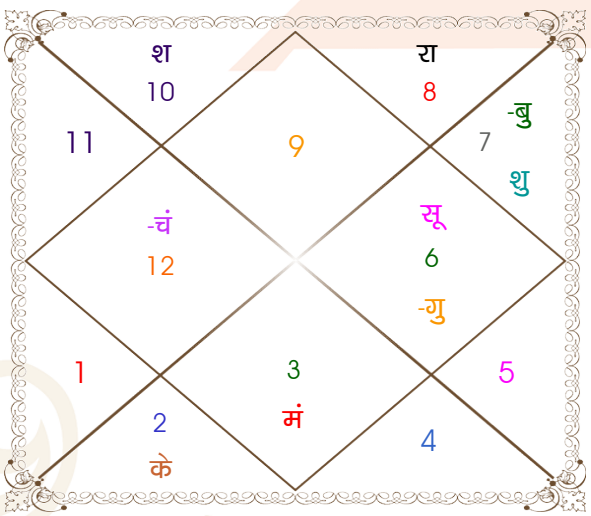

लग्न-चलित

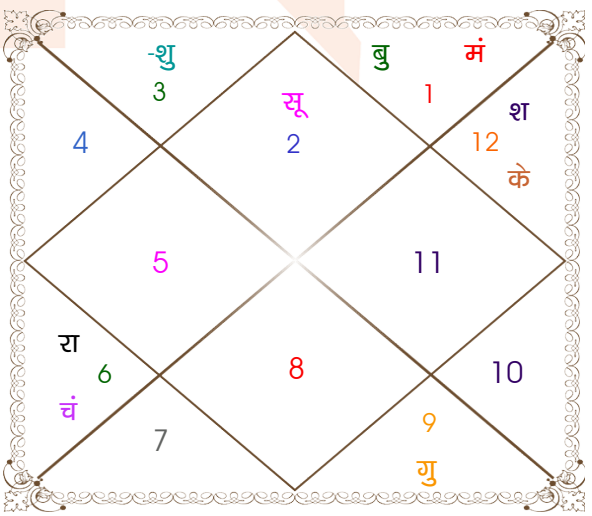

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	कन्या	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

डतणॅनतंअ ॅीतउं का वर्ग सर्प है तथा ठंइपजं झंनीपा का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतणॅनतंअ ॅीतउं और ठंइपजं झंनीपा का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतणॅनतंअ ॅीतउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

ठंइपजं झंनीपा मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ठंइपजं झंनीपा कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल ठंइपजं झंनीपा कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ठंइपजं झंनेीपा कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ैनतंअ ैीतउं कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ैनतंअ ैीतउं तथा ठंइपजं झंनेीपा में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।